International Journal of Education and Science Research Review
December- 2016 Volume-3, Issue-6
E-ISSN 2348-6457
P-ISSN 2348-1817
www.ijesr.org Email- editor@ijesr.org

भारतीय दर्शन– आधुनिक मनोविज्ञान की आधारशिला

डॉं सतीश कुमार सिंह,
सहायक प्रोफेसर शिक्षाशास्त्र विभाग
आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद (उ0प्र0)

सारांशिका

आजकल मनोविज्ञान अपनी प्रगति की उच्चसीमा पर है परन्तु इसकी प्रगति का अपना एक क्रम है। पहले यह दर्शनशास्त्र, नीतिशास्त्र, तर्कशास्त्र तथा धर्मशास्त्र का ही एक अंग था। हमारे भारतीय दर्शन में आधुनिक मनोवैज्ञानिक विचारों (अवधान, चिन्ता, भावना, संवेग, स्मृति, अचेतन आदि) पर चिन्तन बहुत पहले से हो रहा है। प्रस्तुत लेख वर्तमान समय के मनोविज्ञान तथा भारतीय दर्शन के मिलते–जुलते विचारों से सम्बन्धित है जिसमें यह बताने का प्रयास किया गया है कि प्राचीन भारतीय दार्शनिकों तथा आधुनिक मनोवैज्ञानिको के विचारों में बहुत अन्तर नहीं है। अन्तर सिर्फ उनके अध्ययन की विधियों में है। अतः आधुनिक मनोविज्ञान की आधारशिला हम भारतीय दर्शन में देख सकते हैं।

मनोविज्ञान को सामान्यतः मन (उपदक) और मानसिक प्रक्रियाओं (उपदजंस ।बजपअपजपमे) का विज्ञान माना जाता है परन्तु वास्तव में इसका अर्थ इससे कुछ अधिक है। वर्तमान में मनोविज्ञान से तात्पर्य एक ऐसे विधायक विज्ञान से है जिसमें मनुष्य एवं पशु–पक्षियों के शारीरिक एवं मानसिक व्यवहारों के कारक, प्रेरक एवं नियन्त्रक तत्वों को अध्ययन किया जाता है, जिसका विकास का अपना इतिहास है।

मनोवैज्ञानिक तथ्यों की खोज सर्वप्रथम भारत में शुरू हुई थी। पहले मनोविज्ञान दर्शनशास्त्र एक अंग ही था, इसलिये नीतिशास्त्र, तर्कशास्त्र, धर्मशास्त्र आदि के अन्तर्गत इसका अध्ययन होता था। हमारे प्राचीन भारतीय ग्रन्थ (जैसे– वेद, उपनिषद, अत्रेय, आरण्यक, वात्सायन संहिता, छन्दयोग, न्याय, वैशेषिक, साँख्य, योग, अद्वैत दर्शन आदि) में मनुष्य के व्यवहार (शारीरिक व मानसिक) के कारक, प्रेरक एवं नियन्त्रक तत्वों से सम्बन्धित विपुल सामग्री देखने को मिलती है। परन्तु मनुष्य के अन्तःकरण के वास्तविक स्वरूप समझने के लिये जिस अन्तःदर्शन की आवश्यकता होती है वह आज हमारे पास नहीं है। उसके विकास के लिये हमें साधना करनी होगी, परन्तु अफसोस भारतीय ऋषियों द्वारा स्थापित मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों एवं नियमों की सत्यता स्थापित करने में हम आज भी सफल नहीं हुए हैं। हमारी समझ में प्राचीन भारतीय दर्शन में स्थित मनोविज्ञान ही वास्तविक एवं पूर्ण मनोविज्ञान है। मनोवैज्ञानिकों को उससे समझने का भागीरथी प्रयास करना चाहिए।

भारतीय दर्शन में मनुष्य तथा उसकी मानसिक प्रक्रियाओं से सम्बन्धित विचार प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है, जो मनोविज्ञान के आधुनिक रूप को स्पष्ट करते हैं। आधुनिक मनोविज्ञान वैज्ञानिक पद्धतियों के उस रूप में विष्वास नहीं रखते जिस रूप में वे पहले रखते थे। संरचनावाद, प्रकार्यवाद, व्यवहारवाद, गैस्टाल्ट आदि के रूप में आज के मनोविज्ञान को नहीं समझा जा सकता है पर इसका यह तात्पर्य नहीं है कि आधुनिक मनोविज्ञान के अन्तर्गत सिद्धान्तों का ह्रास हो गया है। प्रत्यक्षण, संवेग, अधिगम, व्यक्तित्व तथा अन्य मनोवैज्ञानिक प्रत्ययों से सम्बन्धित सिद्धान्त आज भी है पर उनका वर्गीकरण किसी पद्धति के आधार पर नहीं किया जाता है। मस्तिष्क तथा मानसिक प्रक्रियाओं को समझने का प्रयास ग्रीक तथा पाष्चात्य दार्षनिक वर्षो से करते आ रहे हैं। मानस तथा उसकी प्रक्रियाओं से सम्बन्धित विचार भारतीय दर्षन में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। जो मनोविज्ञान के आधुनिक रूप को स्पष्ट करते हैं।

वात्सायन सहिंता में मस्तिष्क की व्याख्या एक मानसिक तत्व के रूप में ली गयी है। इसे ज्ञानेन्द्रियों तथा आत्मा से भिन्न समझा गया है तथा इसके तीन भाग बताये गये हैं–

1. **बुद्धि**
2. **भावना**
3. **निष्पत्ति की क्षमता**

आत्रेय उपनिषद् में भी मानस की निम्नांकित विशेषतायें बतलायी गयीं हैं। पहली विशेषता है संज्ञान (चेतना) 'मानस द्वारा आत्मा' को वस्तुओं का संज्ञान होता है। दूसरी विशेषता है 'ज्ञान अथवा प्रत्यक्षण' –जब किसी वस्तु को जाना जाता है तब उसका प्रत्यक्षण होता है। तीसरी विशेषता है 'विज्ञान'– यह विवेक की शक्ति है। मानस की चौथी विशेषता है 'प्रज्ञान या बुद्धि'। यह माना गया है कि बुद्धि मानस का जन्मजात गुण है तथा प्रशिक्षण द्वारा इसके विकास की सम्भावना पर बल दिया गया हैं इसकी पाँचवी विशेषता है 'मेधा या ज्ञान' (पेकवउ)। इसके अन्तर्गत स्मरण के कार्य को महत्वपूर्ण समझा गया है। व्यक्ति पुस्तकों के स्मरण से ही ज्ञानी बनता है। इसके बाद 'दृष्टि'

(पदेपहीज) तथा 'घृति' (जमंकेंजिदमे) भी मानस की विशेषतायें मानी गयी है। इनके अतिरिक्त 'मति' (जीवनहीज) या विचार तथा 'मनीसा' या चिन्तनशीलता भी मानस की विशेषतायें है। किन्तु मनुष्य केवल ज्ञानी तथा विवेकशील ही नहीं है वह आवेशों (पउचनसेमे) का भी दास है। आवेशात्मक कार्यो के कारण उसमें 'जुति' या बेबसी की उत्पत्ति होती है। अतः जुति भी एक प्रकार का मानसिक गुण है।

छान्दोग्य उपनिषद में भी पाँचों कर्मेन्द्रियों तथा पाँचों ज्ञानेन्द्रियों पर मानस का नियन्त्रण स्वीकार किया गया है। उपनिषद में यह माना गया है कि केवल ज्ञानेन्द्रियों तथा मानस के कार्य पर्याप्त नहीं है, इसके लिये प्रज्ञान की आवश्यकता है। मानस ज्ञानेन्द्रियों के कार्यो का निर्देशन करता है। संकल्प, ध्यान, शंका, मूल्यांकन आदि इसके गुण है। मानस को आत्मा के ज्ञान का एक साधन समझा गया है। गति एवं सम्वेदनाएं हृदय तथा मानस पर आधारित है अतः हृदय तथा मानस को एक समझा गया है।

न्याय तथा वैशेषिक में मानस को आत्माा से भिन्न बतलाने का प्रयास किया गया है। इसकी व्याख्या एक द्रव्य या पदार्थ के रूप में की गयी है। सभी पदार्थों के गुण होते है मानस का गुण आत्मा का ज्ञान समझा गया है। न्याय तथा वैशेषिक के अन्तर्गत अवधान को मानस के अस्तित्व के प्रमाण के रूप में समझा गया है। अवधान, प्रत्यक्षात्मक, सम्प्रत्यात्मक तथा प्रज्ञात्मक कार्यो का आधार है। न्याय वैशेषिक में दो प्रकार के प्रत्यक्ष ज्ञान का वर्णन किया गया है। निर्विकल्पक तथा सविकल्पक। निर्विकल्पक प्रत्यक्षण में वस्तु के स्वरूप मात्र का बोध होता है किन्त सविकल्पक में उपस्थितकारी तथा प्रतीकात्मक अंश सन्निहित रहते हैं तथा वस्तु का स्पष्ट ज्ञान रहता है।

न्याय दर्शन के अनुसार बाधा द्वारा दुःख की उत्पत्ति होती है। **"बाधानां लक्षणं दुखं।"** जब बाधायें हट जाती हैं तब सुख होता है। न्याय दर्शन में सुख तथा दुःख को एक ही अनुभूति के दो पहलू के रूप में स्वीकार किया गया है। सुख तथा दुःख का सम्बन्ध भूतकाल तथा भविष्यकाल से होता है। भविष्य की कल्पनायें भी सुख तथा दुःख उत्पन्न करती हैं। इच्छा तथा द्वेष के कारण सुख और दुःख होते हैं।

भाष्य सूत्रों में यह बताया गया है कि मानस को किसी एक समय या एक ही क्षण में एक ही प्रकार की ज्ञानात्मक अनुभूति होती है। इसे स्पष्ट करने के लिये गोलाकारं अग्नि की उपमा दी गयी है। जब व्यक्ति को ऐसा प्रतीत होता है कि वह अग्नि की गोलाकृति देख रहा है तब वह वास्तव में अग्नि को अलग–अलग स्थानों पर जल्दी–जल्दी तेजी से घुमते हुए देखता है और उसे यह भ्रम होता है कि वह अग्नि को गोल आकार में देख रहा है। किन्तु न्याय दर्शन के अन्तर्गत मानस को चेतन समझा गया है भाष्य सूत्रों में मानस तथा अन्तःकरण का उपयोग पर्यायवाची के रूप में किया गया है।

प्रभाकर मीमांसा के अन्तर्गत भी मानस के अस्तित्व को प्रमाणित करने का प्रयास किया गया है। बुद्धि सुख दुःख इसके प्रमुख गुण समझे गये हैं। किन्तु मस्तिष्क का आत्मा से सम्पर्क होना भी आवश्यक माना गया है। यह मानस की छठी ज्ञानेन्द्रिय समझा गया है।

सांख्य दर्शन में प्रकृति तथा पुरूष को मुख्य समझा गया है। प्रकृति के गुण सत्, रज, तम बताये गये हैं। महत् तथा बुद्धि पुरूष के गुण समझे गये है। मानस की उत्पत्ति बुद्धि से बतायी गयी है। ज्ञानेन्द्रियों तथा कर्मेन्द्रियों पर मानस का नियन्त्रण रहता है। संकल्प को मानस की एक विशिष्ट विशेषता बताया गया है।

योग दर्शन के अन्तर्गत मानसिक प्रक्रियायें मुख्यतः पाँच प्रकार की होती हैं

1. ***निक्षप्त*** – क्षिप्त मानस की चंचल स्थिति है, इसमें ध्यान शीघ्र बदलता रहता है।
2. ***मुग्ध*** – मुग्ध अवस्था में विस्मरण की प्रधानता रहती है। इसमें व्यक्ति सही कार्य तथा निर्णय देने में असमर्थ रहता है।
3. ***विक्षिप्त*** – इस अवस्था में व्यक्ति अच्छे और बुरे में निर्णय नहीं ले पाता।
4. ***एकाग्र*** – एकाग्र में मानस किसी वस्तु पर ध्यान एकाग्र करता है तथा उसकी वास्तविकता से परिचित होता है। ऐसा करने से अज्ञान दूर हो जाता है और मानस पुरूष की ओर ध्यान केन्द्रित करने में असमर्थ होता है।
5. ***निरूद्ध*** – योग के अन्तर्गत प्रत्यक्ष प्रमाण ज्ञानेन्द्रिय तथा मानस के सम्पर्क से उत्पन्न होता है। मिथ्य ज्ञान को विपर्य बताया गया है। सुख से राग तथा दुःख से घृणा की उत्पत्ति होती है। तथा सुखद वस्तुओं की ओर आकर्षित होता है तथा दुःखद वस्तुओं से दूर जाता है। यह मत आधुनिक अधिगम तथा स्मरण के सिद्धान्तों से मिलता जुलता है। सुखद अनुभूतियों से सीखने में सहायता मिलती है तथा दुःखद अनुभूति से स्मरण तथा अधिगम में बाधा होती है। **फ्रायड** के विचारों में भी इस तथ्य की झलक मिलती है। ज्ञानेन्द्रियों द्वारा मानस किसी वस्तु का प्रत्यक्षीकरण करता है। प्रतिभिज्ञा को एक प्रकार का प्रत्यक्षण कहा गया है।

न्याय भाष्य के अन्तर्गत स्मरण के कारणों पर भी प्रकाश डाला गया है। इसके अनुसार स्मरण के 25 (पच्चीस) कारण बताये हैं।

भारतीय दार्शनिकों के अनुसार स्मृति, संस्कार पर आधारित है, **'संस्कार मात्र जानयं ज्ञानम्।'** जब मानस का सम्पर्क वस्तु से होता है तब संस्कार उत्पन्न होते है तथा इन्हीं से स्मृति होती है। स्मृति पूर्व अनुभव पर आश्रित है। स्मृति तथा प्रतिभिज्ञा के भेद को स्पष्ट करते हुए यह बतलाया गया है कि प्रतिभिज्ञा में वस्तु की उपस्थिति आवश्यक है, पर स्मृति वस्तु की अनुपस्थिति में भी होती है।

योगदर्शन के अन्तर्गत स्मृति संस्कारों को अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण समझा गया है। मानस पर नियन्त्रण (उमदजंस तमेजतंपदज) में इन संस्कारों को नियन्त्रित करने का प्रयास किया जाता है।

संस्कारों की उत्पत्ति ज्ञानेन्द्रियों से होती है। अतः योगदर्शन के अनुसार ज्ञानेन्द्रियों पर उचित नियन्त्रण द्वारा संस्कारों को नियन्त्रित तथा परिवर्तित किया जा सकता है। क्लीष्ट वृत्ति संस्कारों को अक्लीष्ट वृत्ति संस्कारों द्वारा बदला जा सकता है। दुःख तथा चिन्ता उत्पन्न करने वाली स्मृतियों को हटाकर हम हानिकारक स्मृतियों द्वारा दुःख तथा चिन्ता से मुक्तिं पायी जा सकती है।

आधुनिक मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा के अन्तर्गत भी हानिकारक आदतों तथा स्मृतियों को दूर करने तथा उनके स्थान पर सही आदतों तथा स्मृतियों को बदलने का प्रयास किया जाता है। आधुनिक मनोविश्लेषण के अन्तर्गत दुःखद अनुभूतियाँ दमित हो जाती है, पर योगदर्शन के अनुसार संस्कारों को दमित करने का प्रयास किया जाता है। उन्हें स्वीकार कर लिया जाता है। ऐसा कर लेने से उनका प्रभाव कम हो जाता है तथा ज्ञानेन्द्रियों के उचित नियन्त्रण से नये संस्कारों को उत्पत्ति को रोक पाना सम्भव होता है। ऐसा कर लेने से उनका प्रभाव कम हो जाता है तथा ज्ञानेन्द्रियों के उचित नियन्त्रण से नये संस्कारों की उत्पत्ति को रोक पाना सम्भव होता है। जब कम संस्कार उत्पन्न होते है तब ध्यान में बाधा नहीं होती है। अतः योगदर्शन का 'निरोध' फ्रायड के 'दमन से कुछ अंशों में भिन्न है।

फ्रायड के अर्द्धचेतन की तुलना योगदर्शन के 'संस्कारों' तथा 'वासनाओं' से की जा सकती है। योगदर्शन के अनुसार संस्कारों तथा वासनओं के रहते मुक्ति नहीं मिल सकती है।

अद्वैतवादी दर्शन 'मानस एवं सूक्ष्म पदार्थ है। वे मानस को भौतिक तथा अचेतन बतलाते है। 'बुद्धि' द्वारा व्यक्ति ज्ञान प्राप्त करता है। मानस पर 'कर्मेन्द्रियों' तथा 'बुद्धि इन्द्रियों' का कार्य निर्भर करता है। व्यक्ति का चेतन जीवन इन्ही के कार्यो पर आधारित है। इसके अन्तर्गत भी ध्वनि, स्पर्श, रंग (दृष्टि), स्वाद तथा गन्ध को पाँच प्रकार का प्रत्यक्षण बतलाया गया है। ये प्रत्यक्षण 'बुद्धि इन्द्रियों' द्वारा होते है। इसी प्रकार पाँच प्रकार की कर्मेन्द्रियाँ भी है इन सबके परस्पर सम्बन्ध को मानस या अन्तःकरण कायम रखता है। दसो इन्द्रियों का सम्बन्ध वर्तमान की घटनाओं से रहता है, पर मानस की पहुँच वर्तमान के अतिरिक्त भूत तथा भविष्य तक होती है। मानस के द्वारा व्यक्ति सुख तथा दुःख की अनुभूति करता है तथा अर्न्तदर्शन की शक्ति भी मानस से रहती है।

स्वप्न की चर्चा करते हुए यह भी कहा गया है कि प्राणी अपनी जाग्रत अवस्था के कार्यो को स्वप्नों में देखता है। इसी कारण इस अवस्था को अन्तःप्रज्ञा कहा गया है।

मानस, बुद्धि, अहंकार तथा चित्त द्वारा ज्ञान की उत्पत्ति होती है। मानस ज्ञानेन्द्रियों के कार्यो को संगठित करता है। मानस तथा अन्तःकरण का प्रयोग प्रर्यायवाची शब्दों के रूप में किया गया है।

अतः **भारतीय दर्शन** के अध्ययन से यह विदित होता है कि आधुनिक मनोवैज्ञानिक विचारों पर चिन्तन बहुत पहले से होता जा रहा है। प्रत्यक्षण, अवधान, भावना, संवेग, स्मृति, अचेतन सम्बन्धी विचार भारतीय दर्शन में प्रचुर मात्रा में मिलते है। ये विचार कुछ अंशों में आधुनिक मनोवैज्ञानिक चिारों से मिलते–जुलते है। अतः आधुनिक मनोविज्ञान की आधारशिला हम भारतीय दर्शन में देख सकते है। प्राचीन दार्शनिकों तथा आधुनिक मनोवैज्ञानिकों के विचारों में अन्तर अधिक नहीं हैय पर भेद है उनके अध्ययन की विधियों मे। दार्शनिकों की विधि प्रयोगात्मक नहीं थी, पर आधुनिक मनोवैज्ञानिकों की विधि प्रयोगात्मक है। अतः मुख्य अन्तर दोनों की अध्ययन विधि में है न कि उनके विचारों मे। प्राचीन दार्शनिकों की विधि **प्रज्ञात्मक** (पदजनपवद) थी, आधुनिक मनोवैज्ञानिकों की विधि **प्रयोगात्मक** है।

संदर्भग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल, रामनारायन– बाल मनोविज्ञान, कैलाश पुस्तक सदन, ग्वालियर।
2. मोहसिन, एस. एम.– प्रारम्भिक मनोविज्ञान, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
3. Harris, W.T., "Psychological foundations of education, Vol-II, SARUP and Sons", New Delhi.
4. Sharma, Y.K., " Psychological philosophy of education" Vol. – 5
5. Shrivastav, K.K., "Philosophical foundation of education".
6. Chaube, S.P. "Recent philosophies of education", Agra.